

रोती रही-रधा ^{sssss} आये न श्याम ^{sssss} ॥२॥

प्रीत की रीत, बड़ी अलबेली ^{sssss} तो बुनाऊ, घन श्याम ^{sssss}
रोती रही ----- प्रीत की -----

① निदिई नैना ^{sssss} नीर बधये ^{sssss}
विश्र की रीत ^{sssss} हमें समभाये ^{sssss}
भूल गई ^{sssss} विसर गम ^{sssss} ॥२॥

रोती रही ----- प्रीत की -----

② लोक लौन सब-विसर गई मैं ^{sssss}
श्याम पिया से, बिदई गई मैं ^{sssss}
बार निहारू, सुबह शाम ^{sssss} ॥२॥

रोती रही ----- प्रीत की -----

③ बेरन हो गई ^{sssss} निंदिया मेरी ^{sssss}
काली घटायें ^{sssss} इन अंधेरी ^{sssss}
जपती, तेरा, नाम ^{sssss} ॥२॥

रोती रही ----- प्रीत की -----

④ जल बिन मीन ^{sssss} तड़पता जीवन ^{sssss}
रोतीं अखियाँ ^{sssss} सूना है मधुवन ^{sssss}
अब तो आकर ^{sssss} धाम ^{sssss} ॥२॥

रोती रही ----- प्रीत की -----

तेरे चरणों की - मैं थी पुजारिन
दरस बिना तेरे - भई मैं अभागिन
रहती तुझे आठों याम ॥२॥

रोती रही - प्रीत की -
बेसी कान्हा, प्रीत न जाने
मधुर मिलन की - प्रीत न जाने
सुना लगे, वृजधाम ॥२॥

रोती रही - प्रीत की -
जीवन मेरा - ऐसी पहेली
याद में तेरी, प्यारी अकेली
बिसर गई, सब काम ॥२॥

रोती रही - प्रीत की -
मन को मैंने माना सोहली
आजा "श्रीबार्वाधी" मन करत ठिठोली
स्वीकारो पिरणाम ॥२॥

रोती रही - प्रीत की -